Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 8 ~ Issue 11 (2020)pp: 13-16
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

कबीर साहित्यमे मैथिली तत्त्व

लक्ष्मी कुमार कर्ण
पूर्व शोध अध्येता (यू0जी0सी0)
विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
बिहार भारत ।

***R**eceived 08 November, 2020; **A**ccepted 23 November, 2020 © The author(s) 2020.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

एहि शोध आलेखमे कबीर साहित्यमे मैथिली भाषाक तत्व हेरबाक प्रयास कएल अछि ।

भक्ति आन्दोलन कालमे एक गोट सशक्त व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव भेल जे अपन विचारसँ तत्कालीन समाजकेँ अत्यधिक प्रभावित कएलनि, ओ छलाह साहेब कबीर । कतिपय विचारोपरांत हिनक काल 1440–1518 ई0 सन् निर्धारित कएल गेल अछि। हिनक आविर्भाव एहन समयमे भेल जखन भारतवर्षमे मुसलमानी विचारधारक प्रचार–प्रसार नीकजकाँ आरंभ भए गेल छल। एक दिस हिन्दू संतलोकनि अपन धर्म ओ मान्यताकेँ संरक्षित करबाक प्रयासमे जुटल छलथि तऽ दोसर दिस इस्लाम धर्म येन–केन–प्रकारेण अपन विस्तार करय चाहि रहल छल। एहि क्रमसे एक गोट नवीन मत सूफी मतसँ सेहो लोककेँ परिचय भेलैक। आब एहन समय आबि गेल छलैक जे लोकक चिन्तनमे कर्मकाण्डी व्यवस्थाक विरोध करबाक तत्त्व समाहित होमय लागल छलैक।

एहने समयमे काशीमे कबीर साहेब कबीर पंथक संस्थापना कए एक गोट नवीन विचारधारा लए उपस्थित भेलाह। ओ ने तऽ हिन्दूक अगम्य कर्मकाण्डी व्यवस्थापक समर्थन कएलनि आ ने मुसलमानी कट्टरताक। ओ दुनू पर प्रहार करैत ईश्वरक व्यवस्था सरल रूपमे प्रस्तुत कएलनि–

''मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे
मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद,
ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में,
न हीं योग बैराग में।
खोजी हो तो तुरतै मिलिहों,
पलभर की तलास में।
कह कबीर सुनो भाई साधो,
सब स्वाँसों की स्वाँस में।''

कबीर साहेबक एहि विचारधाराक प्रभाव समाजक ओहि वर्गपर पड़ल जिनका लेल हिन्दू कर्मकाण्डी व्यवस्था अगम्य ओ कष्टकर लागि रहल छलनि आ जे सरलतासँ बिनु बाह्य आडम्बरकेँ ईश्वरक भक्तिमे लीन होमय चाहैत छलाह। कबीरपंथमे 'जाति विभेदक निषेध' पैघ कारण रहल जे समाजक ब्राह्णेतर ओ शिल्पी, किसान वर्गक लोक बेसी एहि दिसि आकर्षित भेल। कबीरपंथमे जटिल कर्मकाण्डी व्यवस्थाक मुखर स्वरमे विरोध अवश्य कएल गेल मुदा हिन्दू देवता ओ अराध्यक ईश्वरक रूपमे निरूपण दोहा–साखीमे विशद्रूपेँ भेल जाहिसँ हिनक पंथमे अधिकाधिक हिन्दूक आगमन भेल, मुसलमानक संख्या विरल होइत गेल।

भारतवर्षक उपर्युक्त स्थिति–परिस्थिति ओ परिवर्त्तनसँ आरंभमे तऽ मिथिला बाँचल रहल जकर दू गोट कारण भेल – पहिल, सशक्त ब्राह्णवादी ओ कर्मकाण्डी व्यवस्था ओ दोसर, कबीरक कर्मभूमि काशीक मिथिला सँ दूर होयब। मुदा पछाति कबीर पंथक बसात मिथिलोधरि पहुँचल आ एहिठामक ब्राह्मणेतर समाज ओ छूआ–छूतक दंशसँ कुहरि रहल समाजकेँ विशेष रूपेँ प्रभावित कएलक।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिओध' अपन कृति ''कबीर वचनावली''क भूमिकामे लिखैत छथि – ''1901 ई0क जनसंख्या (मर्दुमशुमारी)क रिपोर्टमे कबीर पंथक संख्या– 8,43,171 लिखल गेल अछि सम्पूर्ण भारतवर्षमे। एहिमेसँ अधिकांश नीच जातिक हिन्दू छथि, उच्चवंशक हिन्दू नाममात्रक छथि। गुरू सेहो एहि पंथक अधिकांश नीचे वर्णक छथि। त्यागी ओ गृहस्थ सेहो एहिमे छथि, किन्तु गृहस्थक संख्या अधिक अछि । ई सभ हिन्दू धर्मेक शासनमे छथि आ ओकरे अनुसार रीति ओ पद्धतिकेँ अनुसरण करैत छथि। एतेक धरि जे अनेको एहन छथि जे हिन्दू देवी–देवताकेँ सेहो पूजैत छथि जखन कि कबीरपंथमे एकर निषेध कएल गेल अछि, केवल गुरूकेँ पुजबाक अनुमति अछि। त्यागी निःसंदेह अपनाकेँ हिन्दू धर्मक सिद्धान्तसँ फराक् रखैत अछि आ ओ हिन्दू धर्मक क्रिया–कलापमे नहि फँसय चाहैत छथि किन्तु, अन्ततः हुनक संस्कार बनल अछि जे ओ हिन्दू छथि, एहि हेतुएँ ओ अनेक अवसर पर हिन्दू क्रियाकलापमे फँसल दृष्टगत होइत छथि। किन्तु ई सत्य अछि जे कबीरपंथी साधु हिन्दु समाजसँ एक प्रकारे अलगे रहैत छथि। हिनका उच्च हिन्दू धर्म–सम्प्रदायसँ किछु वैमनस्य ओ द्वेषजकाँ रहैत छनि।''[1]

उपर्युक्त कथन सँ स्पष्ट अछि जे हिन्दू कर्मकांड़ी ओ कबीरपंथीक मध्य वैमनस्य भाव अछि आ एकर असर मैथिली साहित्य इतिहास लेखन पर सेहो देखल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक जे कोनो इतिहास एखन धरि उपलब्ध अछि ओहिमे वैष्णव, शैव ओ शाक्तक विशद् वर्णन अछि मुदा कबीरपंथक चर्चो नहि अछि। कबीर साहित्यमे मैथिली पद उपस्थित अछि एहि दिसि ध्यानो देबाक प्रयास नहि कएल गेल अछि जखन कि मैथिली पदक अन्वेषणमे नेपालसँ लऽ कऽ बंगाल, आसाम ओ उड़िसाधरि विद्वानलोकनि छानि मारने छथि।

आईसँ सौ वर्ष पूर्व धरि ई मानल जाइत छल जे कबीरपंथी युक्तप्रान्त ओ मध्य भारत मे संख्याक हिसाबे अधिक छथि, पंजाब, बिहार ओ दक्षिण प्रान्तमे कतहु–कतहु पाओल जाइत छथि मुदा पूर्वक ई स्थिति एखन नहि अछि– वर्त्तमानमे मिथिलांचलमे एहि पंथक नीक उपस्थिति अछि। दरभंगा जिलाक भरवाड़ा स्थित कबीर आश्रमक वार्षिक भंडार मे स्थानीय ओ देशक अन्य भागसँ एक लाखसँ अधिक कबीरपंथी जुटैत

छथि। एहि आश्रमक हालधरि संचालक श्री बौआ साहब (2009 में दिवंगत) कबीर साहेबक बीजक टीका, 'कबीर ग्रन्थावलीक सरलार्थ', 'गुरूवाणी'', भजनावली सहित अनेको ग्रन्थक प्रणयन ओ सम्पादन कए मिथिलामे कबीरपंथक महत्त्वपूर्ण केन्द्र स्थापित कएलनि अछि। मिथिलांचलक अन्य भागमे अनेक सक्रिय कबीर मठ सभ अछि। एहन नवीन स्थिति–परिस्थितिमे मिथिलावासी कबीरपंथी द्वारा सेहो मैथिलीमे कतेको कबीर रचित, कबीर अनुरागी संत रचित ओ स्वरचित पदक गायन कएल जा रहल अछि एम्हर दृष्टिपात् करब ओ संकलित करब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि।

सामान्य रूपसँ कबीर साहेबक रचना सधुक्कड़ी भाषामे मानल जाइत अछि जे हिन्दी ओ अवधीक अधिक निकट अछि। मुदा जखन मैथिली विद्यापतिक सद्यःप्रादुर्भावक कारणेँ पूर्णतः सशक्त भाषा भए गेल हो ओकर कोनो तत्त्व कबीर साहित्यमे नहि भेटय से असंभव लगैछ।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कबीर वचनावलीक भूमिकामे लिखैत छथि जे 'एहि ग्रन्थक अधिकांश कविता साधारण अछि। सरस पद्य कतहु–कतहु भेटैत अछि। हँ, जतय कबीर साहेब **'पूरबी बोलचाल**' ओ चालू गीतमे अपन विचार व्यक्त कएने छथि, ओतहुक कविता निस्संदेह अधिक सरस अछि।'[2]

एहिठाम हरिऔध जी जकरा **'पूरबी बोलचाल'** कहलनि अछि ओ निसंदेह मैथिली थिक, सरसता जकर प्रमाण थिक। कबीर ग्रन्थावलीकेँ 'खास ग्रन्थ' कहल जाइछ जाहिमे छोट–पैध 21 गोट पोथी अछि –

1. सुखनिधान, 2. गोरखनाथक गोष्ठी, 3. कबीर पाँजी, 4. बलख रमैनी, 5. आनंद राम, 6. रामानन्दक गोष्ठी, 7. शब्दावली, 8. मंगल, 9. बसंत, 10. होला, 11. रेखता, 12. झूलन, 13. कहरा, 14. हिंदोल, 15. बारहमासा, 16. चाँचर, 17. चौंतीसी, 18. अलिफनामा, 19. रमैनी, 20. साखी, 21. बीजक।

एहिसभमे बीजकक अत्यधिक महत्त्व अछि एहिमे 654 अध्याय अछि।

एहि बीजकक एक गोट पद द्रष्टव्य अछि जाहिसँ मैथिलीक झऽसक अनुभव होयत–

ऐसी वाकी मांसु रे भाई,
पल पल मांसु बिकाई।
हाड़ गोड़ लै घूर पंवारिनि,
आगि धुँवा नहिं खाई।।[3]

उपर्युक्त पदमे मांसु, हाड़–गोड़, घूर आगि, धुँवा आदि शब्द खांटी मैथिलीक थिक। पदक संरचना सेहो मैथिली पद सदृश अछि। बीजकक एक–दू गोट पद और लेल जाय–

देखहु लोगा हरि केर सगाई,
माइ धरि पूत धियउ संग जाई।[4]

– शब्द – 100, बीजक

'आपन कर्म न मेटो जाई,
कर्मक लिखल मिटै धौं कैसे
जो जुग कोटि सिसाई।[5]

– शब्द – 110, बीजक

आब कबीर साहेबक 'अरजी' मे मैथिलीक तरलता द्रष्टव्य अछि–

कतेक दिन हेरब अहाँके बटिा ओ
साहब कतेक दिनऽ
व्याहि जे गेला पिया, घुरओने अयला
अब हम भेलियौ सियनियाँ ओ।
आहाँके देश के पिया कोई ना सम्वदिया
केकरा स कहब दिलके बतिआ ओ।
साहब कबीर ये हो अरजी करतु है,
भेज दियउ डोलिया कहरिया ओ.....[6]

– अरजी, कबीर भजनावली

कबीर वचनावलीक एक गोट पद जाहिमे वचनकेँ चोखगर बनएबाक लेल कबीर साहेब मैथिली भाषाक प्रयोग कएलनि–

दिवाने मन भजन विना दुख पैहों
पहिले जनम भूत के पैहों, सात जनम पछितैहों,
काँटा पर के पानी पिविहों पियासन ही मरि जैहों।।
दोसर जनम **सुग्गा** के पैहों बाग बसेरा लइहों।
टूटे पंख बाझ मँडराने अधफड़ प्राण गँवइहों।।
बाजीगर के **बानर** होइहों लड़िकन नाच नचैहों।
ऊँच नीच के हाथ पसरिहौं, माँगे भीख न पैहों।
पाँचम जनम ऊँट के पैहों बिन तौले बोझ लटै हों।
कहे कबीर सुनो भाई साधो नरक निसाही पैहों।[7]

– कबीर वचनावली

कबीर साहित्यमे 'मंगल' रचनाक सेहो अलगे महत्त्व अछि। एहिमे मैथिली पद द्रष्टव्य अछि –

सुनियै मे पीया मोरा हे जोगी भेल
हमहुँ जोगिनियाँ बनि जायेब।
पिया लागि बनबै हे जोगिनयाँ
अंगमे विभूति रमाय।
वन बीच डोलै हे पीपर पात,
जल बीच डोल लै सेमार।
हम धनि डोलवै है पिया संग
जिनका बिनु किछु न सोहाय।

साहब कबीर मंगल गाओल
संत जनि लेहु विचारि

एमरी के बेर निवाहियउ साजन
फेरि नहि मिलत दीदारि[8]

– मंगल – कबीर भजनावली

आदि पुरूष जहिया हम छलौं
रहलौ मैं वारि कुमारि हे।
भइया जे मिलल भतारके जनमन
तिनका संग भेल वियाह हे।
किनका संग रहलौं, किनका संग बसलौं
किनका संग कैलों घटवारि हे।
किनका संग देश देशान्तर घुमलौं
कबन पुरूष हम नारि हे।
पाँच संग बसलौं पचीस संग रसलौं
तीन संग कैलों घरवारि है।
स्वामी संग देश देशानरि घुमलौं
उहे पुरूष हम नारि हे।
साहब कबीर येहो मंगल गाओल
संतो भाई लेहु न विचारि हे।[9]

– मंगल, कबीर भजनावली

सुनु सखि सुनु सखि सुनु सखि साजन,
सुनु सखि प्रेम हुलास हे।
हंसा हंसनि मिलि करत कुतुहल
अमिय बुंद परमान हे।
पुहुप दीप जहाँ, मूल कमल है
ऋद्धि सिद्धि सेवक पास हे
कहहि कबीर निःअक्षर सुमिरै
आवागमन नहि होय हे।[10]

– मंगल, कबीर भजनावली

पियबा भेजल एक हे चुन्दरी,
पाँचो रंग पेआने लगाई।
चुन्दरी मरम किछु नहि जनलौं
पेन्हिये ओढ़िये कैलों मैल।
बाबा लगाये धन बगिया
रोपि गेल एक बीट बाँस।

ऐसन कपड़ा धोइहा हे धोबिये
दुबिधा के दाग छुटि जाय
साहब कबीर मुख हे मंगल
शब्द परेखु टकसार
एमरी गवन फेर नहि पाएब
ऊहाँ नहिं पैंचा उधार[11]

– मंगल, कबीर भजनावली

मंगल रचनाक उपर्युक्त निदर्श मैथिलीक सार्थकताकेँ स्वतः सिद्ध कए रहल अछि।

मिथिलांचलमे लगनी गएबाक प्राचीन प्रथा अछि। एहि लगनीमे **'सजनी गे'** टेक रहैत अछि। कबीर साहेबक लगनी सेहो कबीरपंथी द्वारा गाओल जाइत अछि हिनक लगनी मे **'सजनी हे'** टेक अछि पद खांटी मैथिलीमे रचित अछि–

रिमझिम बुँद बरिसें दिन रतिया,
किनका स कहबै दिल के बतिया।
सजनी हे सरबर गेल सुखाय,
कमल कुम्भ लाएल हे की।
औघट घाट लागल मेरी नैया
ताहि चढ़ि बैसल वैरिन पाँचो मैया।
सजनी हे केवट भेल मतवाल
पार कोना जायेब रे की।

साहब कबीर गेलनि लगनियाँ
समुझि विचारि पद धरूहे ठगनियाँ
सजनी हे मानुष जनम अनूप
फेरू नहि पायेब रे की।[12]

– 'लगनी' – कबीर भजनावली

जहिया से जीव ऐला
तहिया से पीव हो ऐला
सजनी हे माया देखि गेल,
भुलायल रे की।
सुनहु जगत के जीव
खोजि लेहु अपन पीव
सजनी हे खोजैत खोजैत
अपन पिया पावल रे की।
कहही कबीर सुनु
गुरू पंथ राजी होऊ
सजनी हे गुरू के मुरति मे
सुरति लगावहु रे की।[13]

– 'लगनी', कबीर भजनावली

कबीर ग्रन्थावलीसँ बानगी रूपेँ हेरल उपर्युक्त पद सभकेँ सम्यक रूपेँ देखलासँ स्वतः परिलक्षित होइछ जे जँ पूर्ण तन्मयताक संग कबीर साहित्यसँ मैथिली पद सभकेँ हेरि कए संकलित कएल जाए आ कबीरपंथी सभक लोककंठमे बसल पद संग्रहित कएल जाय तऽ मैथिलीक एक अमूल्य निधि तैयार भए जाएत आ संगहि, मैथिलीक माथ पर लागल ओहि कलंककेँ धोएबाक अवसर सेहो भेटत जाहिमे कहल जाइत अछि जे मिथिला अपन कर्मकाण्डी व्यवस्थेजकेँ अपन मैथिली भाषाकेँ सेहो घेरि–मेढ़ि कए किछुए वर्गधरि सीमित कए देलक अछि। इति।

संदर्भ संकेतः–

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कबीर रचनावली वर्ष–1991, भूमिका
2. तत्रैव ।
3. बौआ साहब, कबीर साहब बीजक टीका, प्रकाषक–कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवाड़ा, दरभंगा, बिहार वर्ष–1989, बीजक षब्द–88 पृष्ठ–313
4. बौआ साहब, कबीर ग्रंथावली (सरलार्थ), प्रकाषक–कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवाड़ा, दरभंगा, बिहार वर्ष–1989, बीजक षब्द–100 पृष्ठ–332
5. तत्रैव – बीजक षब्द–110
6. सम्पादक बौआ साहब, कबीर भजनावली, प्रकाशक–कबीर विचार प्रचार संघ, भरवाड़ा, दरभंगा बिहार वर्ष–1994, अरजी ।
7. सम्पादक–बौआ साहब, गुरुवाणी, प्रकाशक– कबीर विचार प्रचार संघ, भरवाड़ा, दरभंगा, बिहार वर्ष–1996, पृष्ठ–38
8. सम्पादक–बौआ साहब, कबीर भजनावली, प्रकाशक–कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवाड़ा, दरभंगा, बिहार वर्ष–1981, मंगल
9. तत्रैव–मंगल
10. तत्रैव–मंगल
11. तत्रैव–मंगल
12. तत्रैव–लगनी
13. तत्रैव–लगनी

.....